अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : दसवीं- जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 04 जनवरी, 2026)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1 = (15)

(i) शुक्ल पक्षी की उत्कृष्ट स्थिति होती है-
(क) एक पुद्गल परावर्तन (ख) अर्द्ध पुद्गल परावर्तन
(ग) क्रोड़ पूर्व (घ) तीन पल्योपम (ख)

(ii) किन जीवों की उत्कृष्ट स्थिति पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग है-
(क) युगलिक मनुष्य (ख) युगलिक तिर्यंच
(ग) अन्तर्द्वीप मनुष्य (घ) कर्मभूमि मनुष्य (ग)

(iii) एक करोड़ सडसठ लाख सित्तहत्तर हजार दो सो सोलह आवलिकाएँ होती हैं-
(क) एक मुहूर्त में (ख) एक दिन में
(ग) एक घण्टे में (घ) एक माह में (क)

(iv) केवलियों का उपयोग कितने समय में बदलता है-
(क) एक मुहूर्त (ख) एक अहोरात्र
(ग) एक मिनिट (घ) एक समय (घ)

(v) सयोगी केवली अनाहारक की उत्कृष्ट कायस्थिति है-
(क) एक समय (ख) दो समय
(ग) तीन समय (घ) अन्तर्मुहूत (ग)

(vi) त्रीन्द्रिय जीवों की उत्कृष्ट भवस्थिति है-
(क) 49 अहोरात्र (ख)6 माह
(ग) 12 वर्ष (घ) 3 अहोरात्र (क)

(vii) कितनी वर्गणाओं के पुद्गल परावर्तन होते हैं-
(क) 8 (ख)7
(ग) 6 (घ) 4 (ख)

(viii) किस पुद्गल परावर्तन में सबसे अधिक काल लगता है-
(क) औदारिक (ख) कार्मण
(ग) श्वासोच्छ्वास (घ) वैक्रिय (घ)

(ix) शीर्ष प्रहेलिका में कितनी संख्या होती हैं-
(क) 154 (ख) 194
(ग) 140 (घ) 120 (ख)

(x) जीव भाषा रूप में कितने प्रदेशी पुद्गल स्कन्धों को ग्रहण करता है-
(क) अनन्त प्रदेशी (ख) असंख्यात प्रदेशी
(ग) संख्यात प्रदेशी (घ) अप्रदेशी (क)

(xi) भाषा की उत्कृष्ट स्थिति कितने काल की होती है-
(क) एक समय (ख) तीन समय
(ग) अन्तर्मुहूर्त (घ) अनन्त काल (ग)

(xii) एक गाउ में धनुष होते हैं-
(क) 4 (ख) 1000
(ग) 500 (घ) 2000 (घ)

(xiii) सिद्धों का विरह काल कितना होता है-
(क) 6 माह (ख) 6 वर्ष
(ग) 6 दिन (घ) कुछ भी नहीं (क)

(xiv) ऊर्ध्व लोक से एक समय में कितने सिद्ध हो सकते हैं-

(क) 20 (ख) 12

(ग) 4 (घ) 8 (ग)

(xv) पुरुष मरकर वापस मनुष्य बनकर कितने सिद्ध हो सकते हैं-

(क) 108 (ख) 20

(ग) 10 (घ) 4 (क)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 15x1 = (15)

(i) सबसे थोड़े गृहस्थ लिंग सिद्ध होते हैं। (हाँ)

(ii) मध्यम अवगाहना में सबसे कम सिद्ध होते हैं। (नहीं)

(iii) सिद्ध भगवन्तों के आत्म-प्रदेश खड़े पुरुष के आकार में स्थित रहते हैं। (हाँ)

(iv) उत्कृष्ट 2000 धनुष की अवगाहना वाले सिद्ध होते हैं। (नहीं)

(v) कोयल काली है, तोता हरा है-यह भाषा व्यवहार सत्य है। (नहीं)

(vi) सोना आदि का भेद खण्ड भेद कहलाता है। (हाँ)

(vii) केवली समुद्घात के तीसरे समय में जीव सर्वलोकव्यापी होता है। (नहीं)

(viii) अप्रतिपाती सम्यग्दृष्टि दो समय तक निरन्तर सिद्ध हो सकते हैं। (हाँ)

(ix) स्वलिंग से निरन्तर आठ समय तक सिद्ध हो सकते हैं। (हाँ)

(x) एक समय में एक सिद्ध होने वाले जीव सबसे कम है। (नहीं)

(xi) उत्कृष्ट 500 धनुष की अवगाहना वाले मनुष्य सिद्ध होते हैं। (हाँ)

(xii) एक औदारिक पुद्गल परावर्तन में वैक्रिय पुद्गल परावर्तन अनन्त होते हैं। (नहीं)

(xiii) एक श्वास में असंख्यात आवलिका होती है। (नहीं)

(xiv) 100 संवत्सर में 100 वर्ष होते हैं। (हाँ)

(xv) एक पुद्गल परावर्तन में अनन्ता शीर्ष प्रहेलिका पूरी हो जाती है। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- 10x1 = (10)

(i)	3 अहोरात्रि	(क) स्त्री तीर्थंकर	तेउकायिक जीवों की स्थिति
(ii)	12 वर्ष	(ख) याचनी भाषा	बेइन्द्रिय जीवों की स्थिति
(iii)	अन्तर्मुहूर्त	(ग) अनन्त गुणा	सूक्ष्मवनस्पति के पर्याप्त
(iv)	70 कोडाकोडी सागरोपम	(घ) अनन्त काल	प्रत्येक वनस्पति के पर्याप्त, अपर्याप्त
(v)	सबसे थोड़े सिद्ध हुए	(च) पाँच प्रकार की	स्त्री तीर्थंकर
(vi)	अमुक वस्तु दो	(छ) एक समय	याचनी भाषा
(vii)	अभाषक	(ज) तेउकायिक जीवों की स्थिति	अनन्त गुणा
(viii)	भाषा का अन्तर	(झ) बेइन्द्रिय जीवों की स्थिति	अनन्त काल
(ix)	काय योग का अन्तर	(य) सूक्ष्मवनस्पति के पर्याप्त	एक समय
(x)	स्त्रीवेद की उत्कृष्ट कायस्थिति	(र) प्रत्येक वनस्पति के पर्याप्त, अपर्याप्त	पाँच प्रकार की

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1 = (15)

(i) मैं सभी औदारिक पुद्गलों को शरीर रूप ग्रहण करके छोड़ने पर होता हूँ। औदारिक पुद्गल परवर्तन

(ii) मुझे ग्रहण किये बिना कोई जीव सिद्ध नहीं हो सकता। यथाख्यात चारित्र

(iii) मैं यह करो/उठो/बैठो-यह कहने वाली भाषा हूँ। आज्ञापनी

(iv) मैं अनेक अर्थ वाली होने से श्रोता के मन में संशय उत्पन्न कर देती हूँ। संशय करणी

(v) उत्पन्न आदि मेरे दस भेद हैं। मिश्र भाषा

(vi) मुझसे लोकान्त की दूरी एक योजन है। सिद्धशिला

(vii) हम अनन्तर सिद्ध कहलाते हैं। प्रथम समय के सिद्ध

(viii) हम दोनों में अनादि-सपर्यवसित भंग पाया जाता है। चरम, भव्य
(ix) मेरी उत्कृष्ट कायस्थिति 132 सागरोपम झाझेरी है। अवधि-दर्शन
(x) मेरी उत्कृष्ट कायस्थिति एक हजार सागर झाझेरी है। पंचेन्द्रिय
(xi) मेर दूसरा नाम वनस्पतिकाल भी है। असंख्यात पुद्गल परावर्तन
(xii) मैं प्रज्ञापना सूत्र के 18वें पद से लिया गया हूँ। कायस्थिति का थोकड़ा
(xiii) मैं चार हजार कोस प्रमाण हूँ। शाश्वत योजन
(xiv) मेरी जघन्य-उत्कृष्ट काय स्थिति एक समय की है। क्षायिक वेदक
(xv) मेरी उत्कृष्ट स्थिति 6 आवलिका है। सास्वादन समकित

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए- 9x2=(18)

(i) अढ़ाई पुद्गल परावर्तन उत्कृष्ट काय स्थिति किसकी है ?

उ. समुच्चय निगोद की तथा काय अपरीत्त की।

(ii) करण अपर्याप्त किसे कहते हैं ?

उ. पर्याप्त नाम कर्म के उदय वाले ऐसे लब्धि पर्याप्त जीव जिन्होंने स्वयोग्य पर्याप्तियों को अभी तक पूर्ण नहीं किया है, किन्तु अवश्य पूर्ण करेंगे वे 'करण अपर्याप्त' कहलाते हैं।

(iii) असत्य भाषा के दस भेदों में से कोई आठ भेदों के नाम लिखिए।

उ. 1. क्रोध निःसृत, 2. मान निःसृत, 3. माया निःसृत, 4. लोभ निःसृत, 5. प्रेम निःसृत, 6. द्वेष निःसृत, 7. हास्य निःसृत, 8. भय निःसृत, 9. आख्यायिका निःसृत, 10. उपघात निःसृत।

(iv) बहुत नारकी के नैरयिकों ने सात वर्गणापने कितने पुद्गल परावर्तन किये?

उ. अतीता अनन्ता, पुरेक्खड़ा अनन्ता।

(v) किसी भी जीव के आहारक पुद्गल परावर्तन क्यों नहीं होता?

उ. आहारक पुद्गल परावर्तन तभी हो सकता है तब कोई मुनिराज अनन्त बार आहारक लब्धि का प्रयोग करें, किन्तु पूरे संसार परिभ्रमण काल में भी चार बार से अधिक आहारक शरीर नहीं बनने के कारण किसी भी जीव के आहारक पुद्गल परावर्तन नहीं होता है।

(vi) अधोलोक में जीव कहाँ से सिद्ध होते हैं ?

उ. सलिलावती और वप्रा इन दो विजयों से।

(vii) अनादि अपर्यवसित भंग किनमें पाया जाता है ?

उ. अचरम तथा अभव्य में।

(viii) जिन बोलों में अन्तर नहीं पड़ता, ऐसे कोई आठ बोलों के नाम लिखिए।

उ. 1. सिद्ध भगवान, 2. समुच्चय सेन्द्रिय और अनिन्द्रिय, 3. सकायिक और अकायिक, 4. सयोगी और अयोगी, 5. सवेदी के 1, 2 भंग का, अवेदी के पहले भंग का, 6. सकषायी के 1, 2 भंग, अकषायी के पहले भंग, 7. सलेश्य और अलेश्य, 8. सम्यग्दृष्टि के पहले भंग, वेदक व क्षायिक समकित तथा मिथ्यादृष्टि के पहले, दूसरे भंग का, 9. समुच्चय ज्ञानी के पहले भंग और केवलज्ञानी (समुच्चय अज्ञानी, मति, श्रुत अज्ञानी) इन तीनों के एक, दो भंग का, 10. अचक्षुदर्शन और केवलदर्शन का, 11. असंयती के 1, 2 भंग का, नो संयत, नो असंयत, नो संयतासंयत का, 12. अयोगी, केवली, सिद्ध केवली का, 13. सिद्ध अभाषक, 14. संसार परित, संसार अपरित, नो अपरित, 15. नो पर्याप्त-नो अपर्याप्त का, 16. नो सूक्ष्म-नो बादर, 17. नो संज्ञी-नो असंज्ञी, 18. भव्य, अभव्य, नो भव्य- नो अभव्य, 19. चरम, अचरम का।

नोटः- इनमें से कोई आठ बोल मान्य है।

(ix) कितने स्तोक का एक मुहूर्त होता है ?

उ. 7 x 77 = 539 स्तोक।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 9x3 = (27)

(i) संयत की कायस्थिति एक समय किस अपेक्षा से बताई है ?

उ. जब कोई मनुष्य संयम अंगीकार करें तो उसे अप्रमत्त संयत नामक सातवाँ गुणस्थान प्राप्त होता है। प्रथम बार संयम ग्रहण करें तो उसे अन्तर्मुहूर्त्त उस गुणस्थान में रहना ही पड़ता है। उसी भव में दूसरी-तीसरी बार अप्रमत्त संयत गुणस्थान को प्राप्त करे तो आयुष्य पूर्ण होने पर एक समय बाद ही काल कर सकता है। अतः एक समय की स्थिति दूसरी-तीसरी बार चारित्र-परिणाम के आते ही अगले समय में काल करने की अपेक्षा से समझना चाहिए।

(ii) स्त्रीवेद के लगातार 9 भव कैसे होते हैं ?

उ. स्त्रीवेद के लगातार 9 भव हो सकते हैं। सात भव करोड़-करोड़ पूर्व के, एक भव युगलिक का, एक भव देवी का अथवा सात भव करोड़-करोड़ पूर्व के, दो भव देवी के होते हैं। 9 भवों के बाद अवश्य ही वेद बदल जाता है।

(iii) सयोगी केवली अनाहारक के अन्तर से सम्बन्धित तीसरा ज्ञातव्य बिन्दु लिखिए।

उ. अन्तर्मुहूर्त्त पश्चात् अयोगी बनते ही वह पुनः अनाहारक बन जाता है। इसी कारण से सयोगी केवली अनाहारक का अन्तर जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त्त बतलाया है।

(iv) सत्य भाषा के दस भेदों का नामोल्लेख कीजिए।

उ. 1. जनपद सत्य, 2. सम्मत सत्य, 3. स्थापना सत्य, 4. नाम सत्य, 5. रूप सत्य, 6. प्रतीत्य सत्य, 7. व्यवहार सत्य, 8. भाव सत्य, 9. योग सत्य, 10. उपमा सत्य।

(v) पुद्गल परावर्तन के निष्पत्ति काल की अल्प बहुत्व लिखिए।

उ. सबसे थोड़े वैक्रिय पुद्गल परावर्तन, उससे वचन पुद्गल परावर्तन अनन्त गुणा, उससे मन पुद्गल परावर्तन अनन्त गुणा, उससे श्वासोच्छ्वास पुद्गल परावर्तन अनन्त गुणा, उससे औदारिक पुद्गल परावर्तन अनन्त गुणा, उससे तैजस् पुद्गल परावर्तन अनन्त गुणा, उससे कार्मण पुद्गल परावर्तन अनन्त गुणा।

(vi) सूक्ष्म क्षेत्र पुद्गल परावर्तन किसे कहते हैं ?

उ. चौदह राजू प्रमाण लोक के समस्त प्रदेशों में किसी एक जीव को क्रमपूर्वक- एक के बाद एक, इस तरह के क्रम से एक-एक आकाश प्रदेश का स्पर्श कर मरण को प्राप्त होते हुए जितना काल होता है, उतने को सूक्ष्म क्षेत्र पुद्गल परावर्तन कहते हैं।

(vii) जिसने अपना प्रयोजन सिद्ध कर लिया हो, ऐसे मडाई निर्ग्रन्थ के जीव को क्या कहना चाहिए?

उ. हे गौतम ! उसे 'सिद्ध' कहना, 'बुद्ध' कहना, 'मुक्त' कहना, 'पारगत' (पार पहुँचा हुआ) कहना, परम्परागत (अनुक्रम से एक पगतिये से दूसरे और दूसरे से तीसरे, इस तरह संसार के पार पहुँचा हुआ) कहना। इस प्रकार उसे सिद्ध, बुद्ध, मुक्त, परिनिर्वृत (परिणिव्वुडे) अन्तकृत (अंतकडे) और सर्व दुःखों से रहित कहना चाहिए।

(viii) काया के आधार पर सिद्धों की अल्पबहुत्व लिखिए।

उ. 1. वनस्पतिकाय से अनन्तरागत सिद्ध, सबसे थोड़े।
2. पृथ्वीकाय से अनन्तरागत सिद्ध, उनसे संख्यात गुणा।
3. अप्काय से अनन्तरागत सिद्ध, उनसे संख्यात गुणा।
4. त्रसकाय से अनन्तरागत सिद्ध, उसने संख्यात गुणा।

(ix) जिन बोलों में सादि-अपर्यवसित का एक भंग मिलता हो, उनमें से कोई बारह के नाम लिखिए।

उ. 1. सिद्ध भगवान, 2. अनिन्द्रिय, 3. अकायिक, 4. अयोगी, 5. अलेश्य, 6. क्षायिक सम्यक्त्व, 7. केवलज्ञानी, 8. केवलदर्शनी, 9. नो संयत-नो असंयत-नो संयतासंयत, 10. सिद्ध अभाषक, 11. नो परित-नो अपरित, 12. नो पर्याप्त-नो अपर्याप्त, 13. नो सूक्ष्म-नो बादर, 14. नो संज्ञी-नो असंज्ञी, 15. नो भव्य-नो अभव्य, 16. सिद्ध।
नोटः- इनमें से कोई बारह नाम मान्य है।